जैसे कि शुरू में ब्रह्मा बाबा को तथा कई ब्रह्मावत्सों को विनाश और सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार कराया था।

दृश्य इस प्रकार था –

एक ओर मुझे सजा-धजाकर बिठाया गया, सामने सुंदर प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर बगीचा, दूर से सफेद वस्त्रधारी बाबा मेरी ओर धीरे-धीरे आ रहा है, कुछ दूरी से कह रहा है, बच्चे, जिसका आपको इंतजार है वह घड़ी आ गई है, आपको हल चाहिए ना, तो देखो। मैंने देखा, दूसरी ओर से सफेद वस्त्रधारी परी समान नारी धीरे-धीरे ज़मीन पर पधार रही है, हाथ में लिपटे हुए कागज़ों का एक छोटा-सा बंडल लिए। वह सामने आकर खड़ी हो गई। सफेद वस्त्रधारी बाबा ने कहा, बच्चे, आपको अंतिम सहारा चाहिए ना, ले लो। उस सफेद वस्त्रधारी नारी ने सामने आकर लिपटे कागज़ों का पुलिंदा मेरे सुपुर्द कर दिया। मुझे लगा जैसे मैंने यूनिवर्सिटी से पढ़ाई का सर्टीफिकेट पार्सल द्वारा प्राप्त किया है। बाबा बोले, बच्चे, खोलकर देखो। मैंने खोला, बाबा की वाणी (मुरली) थी। फिर बाबा बोले, बच्चे, आपका अंतिम लक्ष्य और अंतिम सहारा यही है।

युगल से सुलह

यह दृश्य देखने के बाद मुझे पूरा निश्चय हो गया कि बाबा ने ही मेरे भावी जीवन की रूपरेखायें दिखाई हैं। मैंने उसे अंतिम सत्य समझकर जीवन का नया मार्ग अपनाया और दूसरी शादी का प्रस्ताव रद्द कर दिया। इस दृश्य से मुझे बहुत कुछ सहन करने की ताकत मिली। लोग मेरी अलौकिक विचारधारा से द्वेष, ईर्ष्या किया करते थे, वे सभी धीरे-धीरे करीब आने लगे। स्वयं मेरी धर्मपत्नी भी ज्ञान की बातों को बहुत करीब से महसूस करने लगी। उन्हें ईश्वरीय ज्ञान का महत्त्व और ताकत अनुभव होने लगी। वह लौटकर हमारे पास आ गई। अब हम दोनों ज्ञान का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। ईश्वरीय सेवा का खूब आनंद ले रहे हैं। युगल के ज्ञान में आने के बाद सभी लोग ज्ञान की खूब तारीफ कर रहे हैं। वह स्वयं भी बाबा से प्राप्त किये हुए अनुभव सुनाती रहती है।

यदि मैं माया के जाल में आकर, समस्या से भयभीत होकर दूसरी शादी करता तो पता नहीं जीवन का नाटक किस मोड़ पर ले जाता। दुनिया की हालत को भली-भाँति समझते हुए, अग्नि की खाई में गिरने से बाबा ने बचा लिया। तब से हर दिन, बाबा के वरदानों की विलक्षण प्राप्तियों का अनुभव कर रहा हूँ। इन सारी सफलताओं के लिए परम प्यारे शिव बाबा के साथ-साथ प्रेरणास्त्रोत निमित्त बहनों तथा भाइयों को विनम्र अभिवादन और धन्यवाद! ❖

मैं डिप्रेशन से..पृष्ठ 20 का शेष

शारीरिक स्थिति में ज़बर्दस्त सुधार हुआ। धीरे-धीरे करके मैंने सारी दवाइयाँ बंद कर दीं। जो नींद मुझसे महीनों से रूठ गई थी वो भी आने लगी। राजयोग के अभ्यास तथा ईश्वरीय ज्ञान की क्लास के फलस्वरूप दो साल में मैं डिप्रेशन से पूर्णतया बाहर निकल आया और अब एक बहुत ही निराली तथा प्यारी ज़िन्दगी जी रहा हूँ। बिल्कुल फ़रिश्तों जैसा जीवन है। खुद भी उड़ता रहता हूँ और दूसरों को भी उड़ाता रहता हूँ। हर समय ऐसा लगता रहता है जैसे कि बाबा मेरे अंग-संग हैं और बाबा से निरंतर चिटचैट होती रहती है। खास अमृतवेले तो बाबा के साथ विश्व के पाँचों महाद्वीपों का चक्कर लगाकर पूरे संसार को लाइट-माइट देने की और प्रकृति को पावन बनाने की सेवा चल रही है। अब दिल यही गुनगुनाता रहता है –

बनाया प्रभु ने है अपना, दिया सुख हमें है कितना
न इतने तारे अंबर में, न सागर में है जल इतना।